



लखनऊ

वर्ष: 14 | अंक: 150

मूल्य: ₹3.00/-

पेज : 12

मंगलवार | 14 मार्च, 2023

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews | janexpresslive | janexpresslive | www.janexpresslive.com/epaper

फसलों को प्रभावित कर रहा तेजी से बढ़ता तापमान

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर।

तेजी से बढ़ता हुआ तापमान संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर



सकता है। यह बात सीएसएयू के साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ.राजीव ने बताते हुए कहा कि संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं। उन्होंने बताया कि किसान निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे। जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला, तरौई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट, एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ड्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है। जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है। ब्लॉक में पौधों को नियमित खुराक मिलती है इसके लिए एन.पी.के. 19:19:19 का 1.5 से 2 फीसदी के घोल का पर्णीय छिड़काव करने के साथ टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें।

www.mhplindia.co.in

Company for Turn-Key Solutions for futuristic Infra Projects

Kanpur : Lucknow : Agra : Noida : New Delhi

Concepts : Shop Drawings: Budgeting: Exections

MHPL

India

Regd. Off. : 15/276, Civil Lines, Kanpur - 208 001

Ph. No. : 9621846000

E-mail : indiamhpl@gmail.com Web : www.mhplindia.co.in



सब्जियों की संरक्षित खेती एक लाभकारी तकनीक

डीटीएनएन

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ विजेन्द्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19-19-19 का 1.5 से 2ब्र घोल का पर्णाय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णाय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचहम पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णाय



छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला, तरौई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट, एवं परलाइट का 3-1-1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्डे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है। खीरा की पार्थेनोकार्पिक प्रजाति जैसे पूसा, बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।



सब्जियों की संरक्षित खेती, एक लाभकारी तकनीक

❑ टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से हफ्ते में दो बार प्रयोग करें किसान



डॉ राजीव

कानपुर, 13 मार्च। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ विजेन्द्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में साकभाजी सस्यविद डॉ राजीव ने बताया कि तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं। इसलिए



यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे, जिससे ढांचों के अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ राजीव ने बताया कि एन.पी.के. 19-19-19 का 1.5 से 2 प्रतिशत घोल का पर्णीय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचक पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णीय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचक पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका का पर्णीय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला, तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मीकुलाईट, एवं परलाइट का 3-1-1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ट्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है। जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है। खीरा की पार्थेनोकार्पिक प्रजाति जैसे पूसा, बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।

सब्जियों की संरक्षित खेती एक लाभकारी तकनीक: डॉ. राजीव

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. विजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज साक भाजी अनुभाग कल्याणपुर में स्थित सब्जी उत्कृष्टता केंद्र में शोध कार्य देख रहे साकभाजी सस्यविद डॉ. राजीव द्वारा बताया गया कि तापमान बढ़ी तेजी से बढ़ रहा है जो संरक्षित ढांचों के अंतर्गत उत्पादित हो रही सब्जी फसलों विशेष रूप से टमाटर एवं शिमला मिर्च में पुष्पन एवं फल विकास की प्रक्रिया को बाधित कर सकता है। संरक्षित ढांचों में इन फसलों की अवधि लंबी होने के कारण पुष्पन एवं फल विकास दोनों प्रक्रिया साथ साथ चलती रहती हैं इसलिए यह आवश्यक है कि किसान भाई निरंतर सिंचाई करते रहे तथा सिंचाई इस प्रकार करें कि जिससे पौधों को भूमि से नमी मिलती रहे। तथा बीच-बीच में संरक्षित ढांचों के अंतर्गत लगे फोगर उपकरणों का भी प्रयोग करते रहे जिससे ढांचों के



अंदर पर्याप्त नमी बनी रहेगी तथा बढ़ते तापमान का प्रतिकूल प्रभाव फसलों पर नहीं पड़ेगा। डॉ. राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि एन.पी.के. 19-19-19 का 1.5 से 2 ल घोल का पर्णाय छिड़काव करें तथा टपक सिंचाई पाइप के माध्यम से प्रत्येक सप्ताह एक से दो बार मिट्टी में प्रयोग करें। ताकि पौधों को नियमित रूप से खुराक मिलती रहे। उन्होंने यह भी बताया कि पौधों को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगभग 12 से 15 दिन के अंतराल पर सूचक पोषक तत्व युक्त उर्वरक का पर्णाय छिड़काव करें जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक होगा। यदि सूचक पोषक तत्व युक्त उर्वरक उपलब्ध नहीं है तो इसके स्थान पर सागरिका

का पर्णाय छिड़काव कर सकते हैं। डॉ. राजीव द्वारा यह भी बताया गया कि पाली हाउस एवं नेट हाउस आदि संरक्षित ढांचों के अंदर वर्तमान समय में खीरा, करेला, तरोई आदि लता वर्गी फसलों की बुवाई सीधे अथवा अलग से नर्सरी तैयार करके की जा सकती है। नर्सरी तैयार करने के लिए कोकोपीट, वर्मिकुलाईट, एवं परलाइट का 3:1:1 अनुपात का मिश्रण तैयार कर प्रोन्ट्रे में भरकर बीजों की बुवाई कर देते हैं तथा सामान्यतया लगभग 20 से 22 दिन में पौध रोपाई के लिए तैयार हो जाती है यह एक मिट्टी रहित माध्यम है जिसमें उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार हो जाती है खीरा की पार्थेनोकर्पिक प्रजाति जैसे पूसा, बीज रहित खीरा- 6, मल्टीस्टार, हिल्टन आदि बाजार में उपलब्ध हैं। जिसमें सभी फूल मादा ही लगते हैं तथा बड़ी संख्या में फल लगते हैं जिनको किसान उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकते हैं।